'तन की सारी सुख-सुविधा में, मेरा मन वनवास दिया-सा'

सुधा ओम ढींगरा की ग्यारह कहानियां वाले नए संकलन 'सच कुछ और था' को पढ़ कर पूरा किया। सुधा जी का एक कहानी-संकलन इसके पहले भी पढ़ा था, दूर परदेस में बसे होकर भी, सारी सुख-सुविधाओं में संपन्न होने के बावजूद अपने देश, अपने गांव, अपने पूर्व परिवेश की भली-बुरी यादों को सहेजती कहानियां- जैसी कि उनकी अनुगूंज मेरे कानों में बनी बची रह गई है। और अब यह संकलन। अमेरिकी जीवन कौलिडोस्पीक, जाहिर इन चित्रों को पुन: उकेरते हुए जब-तब पृष्ठभूमि के रूप में अपना घर-गांव भी आ जाता है- 'हम तो हैं परदेश में...'!

सुधा जी प्राय: कहानियां सिरजते समय अतिरिक्त विन्यास का सहारा नहीं लेतीं मानव-मन को पकड़ती हैं। इन्हें 'स्पेड' को 'स्पेड' कहना आता है, इसीलिए अपने मूल देश के बर-अक्स नए देश-परदेस में जो श्लाघ्य है उसे सराहती हैं ये और जो विसंगतियां हैं उनको बिना लाग-लपेट के गलत कहने का साहस रखती हैं। महिला हैं, तो नारी मनोविज्ञान की बेहतर समझ होनी ही ठहरी। चुप-चुप, हौले-हौले वह सब कह जाती हैं जो प्राय: पाठकों के मन को मथता है और आंखों को नम करता है। यह भी ये फक्त प्रश्न ही नहीं उठातीं, अपने ढंग से उनके समाधान के संकेत भी देती हैं। ये कहानियां 'प्रॉक्सि' से पढ़े जाने के लिए नहीं हैं।

अरे हां, ऐसा शीर्षक लगा दिया है तो उसका औचित्य तो प्रतिपादित कर दूं। मेरी विनम्र दृष्टि में, लेखक, मुख्यत: कथाकार जब सृजनरत होता है तो वह अपनी काया से निकलकर पर-काया में प्रवेश कर जाता है। स्व उसको तब भूल जाता है, स्मृति उस पर सी ही रह जाती है जिसकी छवि वह खड़ा कर रहा है। तन से परे, रचनाकार का मन वनवासी-सा हो जाता है। वनवासी राम को वनवासी ऋषि-मुनियों की रक्षा की चिन्ता सताती रहती है, अयोध्या उस क्षण विस्मृत होता है। -तो अब सीधे-सीधे संकलन की कहानियों की बात।

पहली ही कहानी 'अनुगूंज' हमारे जेहन में गूंजती रहती है। पुरुष प्रेमांध हो जाए, यहां तक भी समझ में आता है, किन्तु वह इतना क्रूर और हिंसक कैसे हो जाता है? किन्तु एक महिला तो है जो अपनी जेठानी की मौत नहीं मरेगी पम्मी के झूठ को ठेंगा दिखा कर जिस की हो लेती है। प्रेम की दो तस्वीरें एक साथ! मनप्रीत का चित्र गढ़ने में सुधा जी का कौशल मन को छूता है।

'उसकी खुशबू' पर कमल किशोर गोयनका की प्रतिक्रिया के साथ हूं मैं। जूली हिंसक क्यों हो गई है? इस बारीक अपराध-मनोविज्ञान को सुधा जी ने पकड़ा है। जूली के शरीर से निकलती तीखी खुशबू का तीखापन लाक्षणिक है।

प्रयोग का आकर्षण अपनी जगह, यह कहानी झूठे आकर्षण, आरस प्रदर्शन के खोखलेपन, जो हैं और जो आपको चाहिए उससे बेखबरी और व्यर्थ के अहं का टकराव और अंतत: लिंडा का घुटकर आत्मघात कर लेना। आश्चर्य होता है, मन के किन-किन अतल कोनों की टोह ले लेने की सामर्थ्य रखती हैं सुधा जी! अमेरिकी पृष्ठभूमि में रचित नकारात्मक- सकारात्मक प्रेम के ये रंग स्तब्ध कर देते हैं।

'पासवर्ड' फिर से अमेरिकी परिवेश में बनी-बुनी कहानी है। कहानी को समझने के लिए सुधा जी की यह पंक्ति पढ़े- 'साकेत ने तो अपनी जिन्दगी का पासवर्ड तन्वी को दे दिया था पर तन्वी के जीवन का पासवर्ड कहीं हो गया था।'! तन्वी अपने प्रेमी मनु के साथ डाल-डाल फुदक रही है और साकेत पात-पात पकड़ता हुआ उसकी शातिराना चाल को नाकाम कर देता है। वीजा, ग्रीन कार्ड, पासवर्ड की अहमियत अमेरिका जाकर ही समझी जा सकती हैं।

'तलाश जारी है' शीर्षक कहानी अत्यंत सकारात्मक सोच वाली है। अपनी कमियों को देखने के लिए आंतरिक साहस की दरकार होती है। अमेरिकी में इन दिनों भारतीय प्रवासियों को लेकर जो अनमनेपन का भाव है उसके अन्य कारण जो हों, एक कारण संभवत: यह भी है कि वहां के नियम, कानून-कायदे को ठेंगा दिखलाने की होशियारी दिखलाते हैं। यों भी कहते हैं कि जब आप रोम में हैं, तो रोमनों की तरह बरतिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि सकारात्मक विचारों से हमें सावधान करती इस कहानी का कहानीपन बचा रहता है और रोचकता भी बनी रहती है।

हमारे यहां शास्त्रों में नियोग-पद्धति की चर्चा है। 'विकल्प' में वैसे ही विकल्प की बात है? कहते हैं, अपने गर्भ से संतान को जन्म देकर औरत पूरी होती है। सुधा जी ने इस साहसिक कहानी के साथ एक प्रश्न भी उछाल दिया है जैसे। इस साहसिक, विरल कथा-प्रसंग वाली कहानी के लिए लेखिका को बधाई तो दी ही जानी चाहिए।

और अब 'विष-बीज'। जिस नारी-शरीर को भोगने की विकलता हो और सहसा लगे कि यह शरीर तो निष्प्राण है, मुर्दा, तो सारी उत्तेजना क्षण में काफूर हो जानी ठहरी। और यदि वह समझ पड़ जाए कि सामने मां पड़ी है, मां जिसे आक्रांता चीन्हता नहीं, किन्तु संशय हो जाने के बाद? कुछ कड़वे उपचार भी इस कहानी में संकलित हैं।

'काश! ऐसा होता' बुढ़ापे में अकेलेपन से बचने की कोशिश की कथा। इस वयस में शरीर का ताप नहीं होता, एकाकीपन का संताप होता है।

और संकलन की 10वीं कहानी- 'और आंसू टपकते रहे'। 'अगले जनम बिटिया न किए जाने की प्रार्थना प्रभु से क्यों करती है महिला, वह भी प्रबुद्ध महिला? औरत को कमजोर बनाने में पुरुष का ही हाथ है। और कहते है कि औरत की दुश्मन औरत ही होती है। कहानी की लड़की ने मिनर्वा होटल की तीसरी मंजिल से नीचे छलांग लगा दी। कोमल का अनिर्णय भी लड़की की आत्महत्या का कारण हो सकता है।

अंत में 'बेघर सच'। लड़की का घर उसका मायका नहीं होता! ससुराल में भी उसे हाथ-पांव फैलाने की जगह न मिले तो? यदि औरत अपने पैरों पर खड़ी है, तो क्यों नहीं वह साहसिक निर्णय ले, अपना अलग घोंसला बनाए और अपने सपनों का संसार बसाए, स्पेस मिले। उसका अधिकार दोनों जगहों में है, नहीं है तो होना चाहिए।

सुधा जी को पढ़ना सुख देता है।

❑❑

एम.आई.जी. 82,
सहजानंद चौक,
हरमू हाउसिंग कालोनी
रांची 834002
मो. 9430145930

लघुकथा

असली बात

❑ मार्टिन जॉन

चौथी कक्षा के उस छात्र ने साहस जुटाकर अपनी जिज्ञासा रखी, ''सर, मैं गाय पर डेढ़ पेज का लेख लिखा, फिर भी कम नम्बर आपने दिया।''

'' कितना मिला?''

''सर, पांच नंबर।.... सोनू ने आधा पेज लिखकर आठ नंबर पा लिया।''

''अच्छा?..... ये ले अपना लेख। पढ़ और देख तूने क्या क्या लिखा है।''

गांव के सरकारी स्कूल के हिंदी शिक्षक ने 'क्लास टेस्ट' के लिए उसका लिखा लेख वाला पेज उसे थमाते हुए कहा।

छात्र अपना लेख पढ़ने लगा, 'गाय एक चौपाया जानवर है। व पालतू जानवर है। उसकी दो आंखें होती हैं। दो कान होते हैं। गाय दूध देती है। गाय गोबर देती है। वह उपकारी पशु है....।'

''बस बस!.... ठहर जा यहीं। अरे, बुड़बक तूने अपना लेख में असली बात तो लिखबे नहीं किया।''

''वो क्या सर?''

''गाय हमारी माता है। हमको इसकी रक्षा करनी चाहिए।''

शिक्षक के होठों पर उभरी निरछी मुस्कान को समझने में असमर्थ छात्र बुझे मन से उठकर अपनी सीट पर जाकर धंस गया।....

❑❑

अपर बेलियासोल, पो. आद्रा,
जिला -पुरुलिया, पश्चिम बंगाल -723121
मो. : 9800940477